हृदय परिवर्तन

उत्तरी बिहार की कोसी नदी विष्वविख्यात है। सुपौल जिला के सुपौल प्रखंड अन्तर्गत एक बलवा नामक पंचायत है, जिसमें 08 राजस्व गांव हैं। इस पंचायत के एक राजस्व गांव पिपराहरि के कुछ भागों को छोड़कर बांकी सारा पंचायत कोसी के दोनों तटबंधों के बीच में अवस्थित है। बलवा के 08 राजस्व गांव में से एक गांव कर्णपट्टी है, जिसके पूरब व पष्चिम दोनों ही तरफ से कोसी की दो–दो प्रमुख धराओं (नदियों) ने घेर रखा है। सुपौल जिला मुख्यालय से इसकी दूरी लगभग 11 किमी है।

कोसी के कहर ने यहां के परिवारों की संख्या को सीमितता प्रदान की है, क्योंकि बरसात के समय में बाढ़ की वजह से कटनियाँ लगना यहां आम बात है। यही वजह है कि यहां मात्र 60 परिवार बसते थे, जिसमें 45 महादलित परिवार 10 मुस्लिम परिवार और 05 यादव परिवार सम्मिलित हैं। गरीबी यहां के लोगों की नियति थी। प्रायः पुरुष पलायन करते थे। महिलाएं दूसरे के खेतों में मजदूरी करती थी। जबकि किषोर व किषोरियां मछली मारने का काम करती थी। चार नदियों के मध्य अवस्थित होने के कारण यहां से रोजमर्रा की सामग्री को उपलब्ध कराना भी काफी कठिन था। सवेरे नाव में सवार होकर सुपौल जिला मुख्यालय या मधुबनी जिलान्तर्गत मधेपुर को जाते हैं। खरीददारी कर शाम को ही धर वापस लौट पाते हैं।

मेघ पाईन अभियान संस्थाओं का नेटवर्क यहां 2007 से ही कार्यरत है। यहां इसका कार्यान्वयन स्थानीय संस्था ग्राम्यषील करती है। जब ग्राम्यषील, मेघ पाईन अभियान कार्यकर्ता एक छोटा सा कार्यक्रम लेकर यहां पहुंची तो यहां के लोगों में आषंका व्याप्त था, क्योंकि यहां के भोले–भाले लोगों को आए दिन दलाल–बिचौलिये उल्लू बनाया करते थे। ऐसी परिस्थिति में काफी समझाने के बाद सर्वप्रथम रामफल सादा उम्र 70 वर्ष, पारोदेवी उम्र 55 वर्ष ने कार्यक्रम में थोड़ी दिलचस्पी दिखाई। धीरे–धीरे वे मेघ पाईन अभियान के कार्यक्रमों के प्रति आष्वस्थ होकर गांव के ढेर सारे लोगों को जोड़ा। जल विकास समिति का गठन हुआ। मेघ पाईन अभियान व ग्रामीणों की धनिष्ठता बढ़ी। अधिकांष लोगों ने वर्षाजल व मटका फिल्टर का काफी उयोग किया। इसके प्रभाव के वारे में कर्णपट्टी निवासी रामफल सादा कहते हैं कि श्मेघा पानी के चलला से हमर गामक कमे लोग आब अस्पताल जाय छै।श समतोलिया देवी का कहना है श्आसिन कातिक मे जे डेरिया होइत रहे से आब नै होइत छै। इ सब मेघ पाईन अभियान टीम हमर मित्र आ सगा संबंधी छी।श

मेघ पाईन अभियान कार्यकर्ता ने महसूस किया कि यहां के लोगों में आपसी द्वेष है, जिसकी जड़ में जागरुकता की कमी है। इसके लिये सर्वप्रथम वहां विद्यालय को केन्द्रविन्दु बनाकर लोगों को जोड़ने का प्रयास हुआ। यहां वर्षों से मुसहर और यादव जाति का झगड़ा होता आ रहा था। कईवार मामला हिंसक रुप भी ले चुका था। ऐसी स्थिति में किसी ग्रामीण समस्या के निदान हेतु सबको साथकर कार्य करना मुष्किल था।

मेघ पाईन अभियान कार्यकर्ता द्वारा काफी प्रयास के बाद एक बैठक का आयोजन किया गया। सूचना देने व लोगों को जुटाने में बच्चों ने दूत का कार्य किया। बैठक में संचालित विद्यालय को जमीन उपलब्ध कराने हेतु बातें हुई क्योंकि विद्यालय को अपनी जमीन नहीं थी। ऐसी स्थिति में सर्वप्रथम गांव में विद्यालय हेतु जमीन की आवष्यकता थी। जिस जमीन पर विद्यालय चल रहा था वह लख्खो यादव की थी। वे बैठक से पूर्व तक विद्यालय हेतु अपनी जमीन देने के पक्ष में नहीं थे, लेकिन मेघ पाईन अभियान कार्यकर्ताओं की बातों से वे बच्चों के प्रति भावुक हो उठे। उन्होंने स्वीकार किया कि बच्चा तो सबका होता है। यदि आजका यह बच्चा भी द्वेषपूर्ण स्थिति में रहेगा तो समाज का क्या होगा ? इसलिये वह अपनी सभी संकीर्णताओं

को भुलाकर विद्यालय हेतु जमीन देने की घोषणा की। कुछ ही दिन बाद उन्होंने विद्यालय के नाम से जमीन रजिस्टरी भी कर दिया। उस जमीन पर विद्यालय भी बना लेकिन 2010 की बाढ़ ने उस विद्यालय सहित गांव के अस्तित्व को ही समाप्त कर दिया।